उपसंहार

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास साहित्य को नया मोड़ देकर उसे वास्तविक जीवन से जोडने का दायित्व उपन्यासकार राजेंद्र यादव ने सफलतापूर्वक निभाया है। यादवजी की प्रत्येक औपन्यासिक कृति पर बदलती परिस्थितियों का प्रभाव स्पष्ट रूप से अंकित हुआ है। बचपन में मिली संयुक्त परिवार की त्रासदी की अनुभूति को यादवजी ने अपने प्रथम उपन्यास "सारा आकाश" में अभिव्यक्त किया है। मध्यवर्ग में जन्मे राजेंद्र यादवजी दिल्ली, कलकत्ता जैसे महानगीरय समस्याओं से स्वंय गुजरे थे। मध्यवर्ग की खींचा-तानी, अभाव भरी जिंदगी को उन्होंने नजदीक से देखा था। इसी कारण यादवजी के उपन्यासों में मध्यवर्ग का चित्रण, उनकी समस्याऐं उपन्यास के कथानक की रीढ़ की हड्डी बन गया है। और स्वयं अनुभव किये महानगरीय समस्याओं को उन्होंने प्रखरता से अपने उपन्यासों में उजागर किया हैं।

सफल उपन्यासकार बनकर जिस तरह यादवजी ने अपनी शारीरिक विकलांगता जैसे शाप पर विजय प्राप्त की है, ठिक उसी तरह "अनदेखे अनजान पुल" की निन्नी ने भारत सरकार के एक जिम्मेदार पद को प्राप्त कर अपने चेहरे की कुरूपता पर विजय प्राप्त की है।

"अनदेखे अनजान पुल" के कथानक की रचना करते समय कुरूप निन्नी को केंद्र बिन्दु मानकर कथानक को आगे बढाया है। उपन्यासकार ने नायिका निन्नी के जीवन की उन सभी घटनाओं को बहुत ही कुशलता से प्रस्तुत किया हैं, जो निन्नी के चरित्र और उपन्यास के मुल उद्देश्य को सफलतापूर्वक पाठकों के सामने प्रस्तुत कर सकें। जीवन की विविध अवस्थाओं का चित्रण, मानव जीवन की समस्याओं की व्याख्या इन सभी को कुशलता से चुनकर कथानक को क्रमबद्ध और सुनियोजित घटनाओं के सहारे गतिशील बनाया है। मुख्य कथा और प्रासंगिक कथा को औचित्य और प्रभाव के साथ संगठीत किया है।

"अनदेखे अनजान पुल" उपन्यास का शीर्षक विस्तृत होकर भी आकर्षक, चमत्कारीक और जिज्ञासा उत्पन्न करनेवाला शीर्षक है। नायिका निन्नी अपने सामने प्रस्तुत हुए अनेक अनदेखे

और अनजान पुलों को अपने आत्मबल के सहारे लाँघकर जीवन में सफल हो जाती है। इसलिए यह शीर्षक उचित और सार्थक बन पड़ा है।

"अनदेखे अनजान पुल" उपन्यास के कथोपकथन पूर्ण सार्थक और सारगर्भित है। कथोपकथन कथानक को गति प्रदान करते हुऐ पात्रों की व्याख्या करते हैं। दर्शन के प्रभावोत्पादक संवादों ने लेखक के उद्देश्यों को स्पष्ट किया है। उपयुक्तता, अनुकूलता, संक्षिप्तता, भावात्मकता, सम्बद्धता, स्वाभाविकता, उद्देश्यपूर्णता आदि कथोपकथन के गुणों से संवाद अत्यंत सफल हुए है।

"अनदेखे अनजान पुल" की भाषा सार्थक और सफल अभिव्यक्ति की क्षमता रखनेवाली भाषा है। उपन्यासकार राजेंद्र यादवजी ने भाषा शैली के द्वारा "अनदेखे अनजान पुल" उपन्यास को अधिक आकर्षक और प्रभावशाली बना दिया है। यादवजी का भाषा पर अच्छा प्रभुत्व है, इसी कारण उपन्यास की भाषा सार्थक और सफल बनी है। भाषा पात्रों के अनुरूप और प्रसंगानुरूप है। पत्र शैली के द्वारा पात्र अपने मन की जटिल बातों को सहजता से प्रकट करते हुऐ दिखाई देते हैं।

यादवजी ने "अनदेखे अनजान पुल" उपन्यास में देश-काल-वातावरण के सभी प्रकारों को चित्रित किया है। जिससे कथानक का प्रभाव बड़ गया है। उन्होंने सामाजिक वातावरण निर्माण करके उसमें दहेज प्रथा, कुरूपा के प्रति समाज का निराशापूर्ण दृष्टिकोन, विवाह, रूढ़ि-परम्परा,रीतिरिवाज अन्धविश्वास आदि बातों को महत्वपूर्ण बताकर वातावरण को सफल बनाया हैं। इसके साथ सांस्कृतिक वातावरण, प्राकृतिक वातावरण को भी महत्व दिया है। इन सभी वातावरण से उपन्यास प्रभावी बन गया है।

"अनदेखे अनजान पुल" का प्रत्येक पात्र सजीव है। निन्नी से लेकर रिटायर्ड शर्मा तक के सभी पात्र व्यवहारिक प्रतित होते हैं। उपन्यास के प्रत्येक पात्र की क्रियाएँ, उसका व्यवहार, उसके चरित्र पक्ष का गठन आदि सभी कुछ इस तरह नियोजित हुआ है कि वे पूर्ण स्वाभाविक प्रतित होते हैं। "अनदेखे अनजान पुल" के पात्रों की जीवन्तता, स्वाभाविकता

यथार्थता का पूर्ण मनोवैज्ञानिक विकास पाठक को झकझोर देता है। उपन्यास की निन्नी भी उन कुरूप-युवतियों का चित्र है, जो चेहरे की कुरूपता के कारण मर्यादा और समस्याओं से घिर जाती है, और घुटन भरी जिंदगी बिताने पर मजबूर हो जाती है। उपन्यास में निन्नी के मानसिक द्वंद्व की अभिव्यक्ति अत्यंत सफलता के साथ हुई है। बडी मनोवैज्ञानिकता के साथ पात्रों के व्यक्तित्व को उपस्थित किया गया है। तिलचट्टे और मकडी के द्वारा निन्नी के मन के भय और सपने की भावनाओं को बडी प्रतीकात्मकता के साथ उपन्यासकारने अभिव्यक्त किया है। दर्शन का पात्र लेखकीय विचारों से प्रसूत हैं। जिसके विचार तथा दृष्टिकोन मानवता और विश्वबंधुत्व के प्रतिक है। निन्नी और दर्शन के चरित्र-चित्रण में उपन्यासकार सफल हुआ हैं। निन्नी और दर्शन के अलावा अन्य सभी पात्र गौण है। उपन्यास चरित्र-चित्रण की दृष्टि से सफल बन पड़ा है।

'अनदेखे अनजान पुल' में राजेंद्र यादवजी ने मध्यवर्ग की वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक समस्याओं का सफलता पूर्वक चित्रण किया हैं। कुरूपता के कारण उत्पन्न प्रबल हीन भावना पर कुरूप निन्नी उपन्यास के अंत में नौकरी पाकर मात करती है। कुरूपता की समस्या ही उपन्यास की प्रधान समस्या है। जिसके समाधान के लिए उपन्यासकारने सौंदर्य की नई व्याख्या पाठकों के सामने प्रस्तुत की है, कि व्यक्ति के बाहय सौंदर्य के बजाय व्यक्ति के आंतरिक, गुणात्मक सौंदर्य को महत्वपूर्ण मानना चाहिए। कुरूपता को छोडकर अन्य समस्याओं का समाधान लेखक ने सूचित नहीं किया है। इन समस्याओं को लेखक ने मात्र चित्रित ही किया है। उपन्यास में कुल ग्यारह समस्या चित्रित की गई हैं।

"अनदेखे अनजान पुल" चरित्र-प्रधान मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। मनोविश्लेषण की दृष्टि से निन्नी का पात्र ही प्रभावी लगता है। यादवजी ने व्यक्तिगत, हीनताओं और दुर्बलताओं से ग्रस्त मध्यवर्गीय नारी को अपने उपन्यास का केंद्र बनाया है। यादवजी का यह नारी पात्र व्यक्तिवादी है, किंतु वे उसे समाज से जोडते है समाज हीत के लिए नहीं बल्कि उसकी विसंगतियाँ उजागरकर उसके आचारण के वैषम्य को दिखाने के लिए। उपन्यास में निन्नी के मन के विकारों, वैयक्तिक अनुभूतियों, कुण्ठाओं तथा विक्षिप्त अवस्थाओं का विश्लेषण मार्मिक ढंग से प्रस्तुत

किया है। हीनता ग्रस्त नारी का मनोविज्ञानिक विश्लेषण करने में यादवजी को काफी सफलता मिली हैं।

उपन्यास में चित्रित निन्नी के संघर्षी जीवन को देखते हुए यही कहना उचित होगा कि "अनदेखे अनजान पुल" की निन्नी तो किसी शहर की हजारों घृणीत, उपेक्षित और तिरस्कृत गलियाँ लाँघकर आयी है और जीवन सफलता का बोध करानेवाले एक मकान की तलाश कर चूकी है। ये तलाश जीवन की पथरीली राहों पर चलकर पायी हुई विजयश्री का बोधचिन्ह है, मानचिन्ह है।

अन्ततः "अनदेखे अनजान पुल" एक कुरूप युवती निन्नी की हीनतानुभूति की ऐसी कथा है जो व्यक्ति की ही नहीं समाज की भी है। वह ऐसी प्रमुख नहीं, जो हमारे दैनिक जीवन से सम्बद्ध हो तथापि इस शाश्वत सत्य से जरूर संलग्न है जो नियति के कोपभाजन की कुंठाग्रास्त मनोग्रान्थियों को उजागर करती है।

कुरूपता से उत्पन्न हीन भावना से ग्रस्त नारी जीवन का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण उपन्यासकार राजेंद्र यादवजी ने "अनदेखे अनजान पुल" उपन्यास द्वारा कुरूप निन्नी का किया है उसी प्रकार "जहाज का पंछी" उपन्यास में सौंदर्य अभाव का शिकार बनी "लीला" का चित्रण उपन्यासकार इलाचंद जोशी ने किया है।

"जहाज का पंछी" उपन्यास की लीला समाज की अर्थ-लिप्सा की भावना से व्यथित थी। अपनी असुंदरता के कारण अविवाहित जीवन में उत्पन्न अतृप्ति की भावना से परिचलित थी। नायक के विश्वकल्याणात्मक महत् उद्देश्य में सहयोग प्रदान कर वह आत्मिक तुष्टि प्राप्त करती है। और नायक का प्रेम उसकी अतृप्ति को पूर्णता प्रदान करता है।

"जहाज का पंछी" उपन्यास की लीला असुंदर होकर भी नायक का प्रेम पाती है और अपनी अतृप्त भावनाओं को तृप्ती प्रदान करती है। लेकिन "अनदेखे अनजान पुल" की कुरूप निन्नी उपन्यास के अंत तक प्रेम से वंचित रह जाती है फिर भी अपने आत्मविश्वास के बल पर अविवाहित रही निन्नी अपनी हीनता ग्रन्थि पर विजय पाने के प्रयास में डिप्टी

सेक्रेटरी के पद तक पहुँचती हैं और पद की श्रेष्ठता के कारण समाज का ध्यान उसके कुरूप चेहरे की ओर जाता नहीं। विश्वबंधुत्व की भावनासे प्राप्त दर्शन का चुम्बन उसके जीवन का महत्वपूर्ण संबल बन जाता है, उसी के सहारे वह अपने व्यक्तित्व का विकास करती है।

इसी दृष्टि से "जहाज का पंछी" की लीला से "अनदेखे अनजान पुल" की निन्नी अधिक प्रभावी लगती है।

मेरे इस लघु-शोध-प्रबन्ध की मौलिकताएँ निम्न लिखित है -

१. समग्र विवेचन, उपलब्ध सामग्री तथा प्रत्यक्ष अध्ययन पर आधारित है।

२. उपन्यास की कथा एवं पात्रों की चरित्रगत विशेषताओं को व्यवहारिक दृष्टि से सामाजिक परिप्रेक्ष्य में परखने की कोशिश की है।

३. उपन्यास का मनोवैज्ञानिक अध्ययन करके मनोविश्लेषण की विशेषताओं के आधार पर उपन्यास के पात्रों का मनोवैज्ञानिक विवेचन किया गया है।

<u>अनुसंधान की उपलब्धियाँ</u> :-

१. क्या राजेंद्र यादव के व्यक्तित्व का प्रभाव उनके कृतित्व पर दिखाई देता है ?

राजेंद्र यादवजी का जन्म मध्यवर्ग संयुक्त परिवार में हुआ था। मध्यवर्ग की अभावग्रस्त जिंदगी, उनकी समस्याओं को उपन्यासकार ने नजदीक से देखा था। अपनी इसी अनुभूति को उन्होंने अपने उपन्यासों में चित्रित किया हैं। इसीलिए उनके उपन्यासों में मध्यवर्ग का चित्रण, उनकी समस्याएँ, उनका रहन-सहन उनकी मर्यादा आदि सभी का चित्रण पाया जाता है। उपन्यासकार को दिल्ली, कलकत्ता जैसे महानगर की समस्याओं से गुजरना पड़ा था। भोगना पड़ा था। उनके उपन्यासों में इन्ही महानगरीय समस्याओं ने अभिव्यक्ति पायी हैं। यहाँ यह स्पष्ट हो जाता है कि राजेंद्र यादवजी के व्यक्तित्व का प्रभाव उनके कृतित्व पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

२. उपन्यास में निन्नी के मनोविश्लेषण में क्या लेखक सफल हुआ है ?

"अनदेखे अनजान पुल" उपन्यास की निन्नी कुरूपता के कारण हीनता की ग्रन्थि से पीडित है। इस चरित्र प्रधान मनोवैज्ञानिक उपन्यास में निन्नी के मनोविकारों, वैयक्तिक अनुभूतियों, कुण्ठाओं तथा विक्षिप्त अवस्थाओं का विश्लेषण मार्मिक ढंग से लेखक ने प्रस्तुत किया है। हीनता ग्रस्त नारी का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करने में यादवजी को काफी सफलता मिली है। उपन्यास में निन्नी के मानसिक द्वंद्व की अभिव्यक्ति अत्यंत सफलता के साथ हुई है। बड़ीही मनोवैज्ञानिकता के साथ उसके व्यक्तित्व को उपस्थित किया गया है। निन्नी के मनोविश्लेषण में राजेंद्र यादवजी सफल हुऐ है। शायद स्वयं विकलांग होने के कारण इस वेदना को यादवजी प्रभावी ढंग से चित्रित कर सके हैं।

३. क्या उपन्यास में चित्रित कुरूप निन्नी अपनी कुण्ठाओं और हीनता बोध से मुक्ती पाती है या नहीं ?

कुरूपता के कारण कुण्ठित निन्नी अपने जीवन में अपमान, उपेक्षाओं को अनेक बार सहती है। दर्शन का प्रेम न मिलने पर कुण्ठाओं से ग्रस्त निन्नी बीमार पड़ जाती है। मौत के दरवाजे में खड़ी निन्नी दर्शन के आत्मीय चुम्बन से सँभल जाती है और अपने हीनता बोध और कुण्ठाओं से मुक्त हो जाती है। इसके बाद वह पढ़-लिखकर भारत सरकार के डेप्टी सेक्रेटरी के पद पर विराजमान हो जाती है। अपनी कुण्ठाओं और हीनता बोध में कैद हुई निन्नी इनसे मुक्त होकर सफलता के विशाल आकाश में अभिमान से विहार करने लगती है।

४. दर्शन किस प्रकार का पात्र है ? उसका महत्व क्या है ?

दर्शन उपन्यास का महत्वपूर्ण पात्र है। उपन्यास के अन्य पात्र निन्नी की उपेक्षा करते हुऐ दिखाई देते हैं। लेकिन कुरूप निन्नी के प्रति दर्शन का व्यवहार मानवीय गुणों से युक्त है। दर्शन निन्नी के बाहय सौंदर्य को गौण मानकर उसके आंतरिक गुणों को महत्व देता है। दर्शन मानता है कि, व्यक्ति के आंतरिक गुण ही उसकी सुंदरता है। उपन्यास में

चित्रित दर्शन का पात्र लेखक के क्विारें का प्रतिनिधित्व करनेवाला पात्र है। इसीलिए यह पात्र अन्य पात्रें से अलग जान पडता है। दर्शन के द्वारा ही लेखक सौंदर्य की नई परिभाषा प्रस्तुत करता है। बीमार पडी निन्नी के लिए दर्शन एक पुल बनकर आता है और इसी दर्शन रूपी पुल की सहायतासे निन्नी बीमारी से उठकर भारत सरकार के डिप्टी सेक्रेटरी जैसे जिम्मेदार पद को पाप्त कर लेती है। इसी कारण उपन्यास में दर्शन का पात्र महत्वपूर्ण बन जाता है।

अनुसंधान की नई दिशाएँ :-

राजेंद्र यादव के कृतित्व पर निम्न दिशा में अनुसंधान किया जा सकेगा -

१. "राजेंद्र यादव के उपन्यासों में कुण्ठित पात्रों का मनोविज्ञान। "

-o-o-o-o-o-o-